International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-07-2026, Accepted: 18-08-2026, Published: 02-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 360-361

रानी की वाव के शिल्पों में प्रस्तुत नृत्यकला

मिस स्नेहल आर. गरासिया
रिसर्च स्कॉलर, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन, गुजरात, गुजरात, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12313

सारांश
रानी की वाव प्राचीन गुजरात की राजधानी अनहिलवाड़ पाटन में स्थित है। इसे भीमदेव की पत्नी रानी उदयमती ने अपने पति की याद में और प्रजा के कल्याण हेतु बनवाया था। इसे UNESCO ने वर्ष 2014 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया था।

मुख्य शब्दः पाटन, रानी–की वाव, मारू गुर्जर शैली, शिल्पों में नृत्य, वर्ल्ड हेरिटेज

भारत में शिल्प और स्थापत्य भारतीय संस्कृति की जीती–जागती झलक दिखाते हैं। यहां पत्थर भी संगीत की लय पर झूमते हैं। मूर्तियों में कारीगरों ने जिन भावनाओं में अपनी जान डाली है, वे मूर्तियों की मुद्राओं के ज़रिए दिखाई देती हैं। भारतीय नृत्यकला परंपरा नाट्य शास्त्र पर आधारित है। भरत मुनि ने नृत्य को एक दिव्य कला के तौर पर स्थापित किया है। अलग–अलग स्थापत्य में नृत्य भक्ति और सुंदरता का एक माध्यम है। नृत्य की मुद्राओ को शरीर के अंगो का संचालन और रससिद्धांतों को मूर्तियों में पत्थर पर उत्कीर्ण गया है।

पाटन में मौजूद रानी की वाव में स्थित अलग–अलग मूर्तियों की कई खासियतें हैं। जैसे देवी–देवताओं की मूर्तियां, विष्णु के दस अवतारों, नर्तकियों, भैरव, गणेश, महिषासुर मर्दिनी, हनुमान, सूर्य, ब्रह्मा, बुद्ध, नवग्रह, परशुराम, अथवसु और कुबेर वगैरह की मूर्तियां यहां मौजूद हैं।
इन अलग–अलग मूर्तियों में नाचते हुए डांसर्स की अलग–अलग मूर्तियां वाव के आकर्षण का केंद्र हैं। वे एक आध्यात्मिक और शृंगाररस का नज़ारा दिखाती हैं।

इतिहास

मध्यकालीन गुजरात की राजधानी, अनहिलपुर पाटन पर चावड़ा वंश, सोलंकी वंश और वाघेला वंश जैसे हिंदू शासकों का राज था । सोलंकी काल में गुजरात का विकास अपने चरम पर था। इसलिए इसे गुजरात के इतिहास में स्वर्णिम काल बताया जाता है। खासकर भीमदेव प्रथम, सिद्धराज जयसिंह और कुमारपाल के शासनकाल में सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत विकास हुआ। गुजरात के पाटन में रानीकी वाव का निर्माण सोलंकी वंश के महान राजा भीमदेव प्रथम की पत्नी और जूनागढ़ के राजा खेंगर की बेटी रानी उदयमती ने अपने पति भीमदेव की मृत्यु के बाद प्रजाकल्याण के लिए उनकी याद में करवाया था। यह वाव सरस्वती नदी के किनारे बनाई गई थी, जो गर्मियों में स्थानीय लोगों और तीर्थयात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण जलाशय का काम करती थी।

रानी की वाव की मूर्तियों में दिखाई देती नृत्य कला

रानी की वाव की वास्तुकला उतनी ही अद्भुत है जितनी कि वाव की सजावट में उकेरी गई सजीव मूर्तियों की शिल्पकला। सात मंजिला वाव की वास्तुकला अद्भुत तकनीक और शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यहां वाव की सातों मजलो को कुशल कला और शिल्पकला से सजाया गया है। यहां अनेक मूर्तियां हैं। और उनमें से अप्सराओं की मूर्तियां हैं। जिन्हें विभिन्न मुद्राओं में दिखाया गया है। अप्सराओं की मूर्तियां खासतौर पर श्रृंगार रस की झलक दिखाती हैं। यहां अप्सराएं हस्तमुद्रा, कटि भंग, त्रि भंग जैसी नृत्य मुद्राओं में दिखती हैं। उनके शरीर का प्रत्येक अंग, प्रत्यंग और हस्तमुद्रा तथा पैरों की गतिविधियां नाट्यशस्त्र पर आधारित हैं। अलपद्मा, कटकामुख, चंद्रकला जैसी मुद्राएं हस्तमुद्रा में व्यक्त की गई हैं।

यहाँ एक मूर्ति है जिसे नाचते हुए दिखाया गया है। इसमें अप्सरा को थोड़ा आगे की ओर झुके हुए और एक पैर उठाए हुए दिखाया गया है। उसे एक पैर में चप्पल पहने हुए दिखाया गया है। वह एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में मछली पकड़े हुए दिख रही है। उसके बाल जूड़े में बंधे हैं और उसका पूरा शरीर गहनों से सजा हुआ है। उसकी कमर पर एक जानवर की खाल लिपटी हुई दिख रही है। उसके कंधे से एक फंदा लटका हुआ दिख रहा है। मूर्ति के नीचे एक दाढ़ी वाला आदमी ढोल बजा रहा है।

इसके अलावा महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति के चारों ओर अप्सराएँ भी अपने अंगों को मोड़कर सजी हुई दिखाई देती हैं। जिसमें, एक तरफ एक हाथ ऊपर और एक हाथ नीचे करके खड़ी हैं। जबकि दूसरी तरफ शायद शीशे में अपना चेहरा देखते हुए और अपने कानों की बालियाँ ठीक करते हुए दिखाई देती हैं। इसके अलावा, वराह मूर्ति के चारों ओर दो अप्सराएँ भी नाचती हुई दिखाई देती हैं। एक तरफ की मूर्ति में, अप्सरा का एक हाथ ऊपर और एक हाथ नीचे उसके पैरों की ओर है। नीचे वाले हाथ पर साँप का चेहरा दिखाई देता है। वह छिपे हुए गहने पहने हुए दिखाई देती है। दूसरी तरफ की अप्सरा का एक हाथ ऊपर और एक हाथ नीचे है। वह कई गहने पहने हुए दिखाई देती है। उसकी कमर और एक कान में एक बड़ा घेरा दिखाई देता है, जबकि दूसरा कान दिखाई नहीं देता है। विष्णु के वामन अवतार के चारों ओर और वामन और राम अवतार की मूर्तियों के बीच भी अप्सराएँ दिखाई देती हैं। बीच में अप्सरा अपने दोनों हाथों को कमर के पीछे करके थोड़ी झुकी हुई है। उसके गले में एक हार है और कानों में घेरे हैं। रानी की वाव में ज़्यादातर मुख्य मूर्तियों के आस–पास अप्सराओं की मूर्तियां दिखती हैं। उनकी मुद्राएं सुंदर हैं। शरीर के अंगों जैसे कमर, हाथ और पैरों की मुद्राएं नृत्य मुद्रा का एहसास कराती है।

रानी की वाव की सुंदरता इन अलग–अलग मूर्तियों की वजह से कमाल की है। विशेष तकनीकी और स्थापत्य शैली इतने अद्भूत कुशल कारीगरों द्वारा पत्थर पर बनाई गई मूर्तियों की वजह से इस स्थापत्य का सविशेष महत्व आंका गया है।

इस रानी की वाव को साल 2014 में UNESCO ने वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया है। साल 2018 में, रानी की वाव की तस्वीर 100 रुपये के इंडियन करेंसी नोट पर लगाई गई थी। जिसे रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया ने जारी किया था। इस तरह, रानी की वाव न सिर्फ़ गुजरात के शिल्प–स्थापत्य में बल्कि संपूर्ण भारत में भी एक बेहतरीन रचना है।

सन्दर्भ

1. Prajapati Mayurkumar, Kava Tanisha, Rani ki Vav at Patan: An Architectural Heritage., www.ijrar.org (E-ISSN:2348-1269, P:2349-5138)
2. Jutta Jain Neubauer, "The Stepwell of Sthamba (Gujarat) and its Sculptures Scenes of Dance and Music'
3. Mankodi Kirit, 2006, The Queen's Stepwell at Patan, ISBN:978-8190018401
4. Munshi K.M, 2020, Patan ni Prabhuta, Gujarat Prakashan, ISBN:978-80-93-5175-332-2.
5. Bansal Varsha, "Patan ke Solanki Kalin Rani ki Vav ke Murtishilp-Ek Klatmak Adhyayan" Ph.D. Thesis, Dayal bag Educational Institute.
6. Vatsayan Kapila, Classical dance in literature and The Arts, Sangeet, Natak Akadami , New Delhi , 1968
7. भरत मुनि ,नाट्यशास्त्र , गुजराती – संस्कृत अनुवाद संस्थान – संगीत अकादमी प्रकाशन , वाराणसी
8. मेहता रसिकलाल , गुजरात का शिल्प–स्थापत्य , यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड , अहमदाबाद , 1998
9. जोशी उमाशंकर, भारतीय संस्कृति, यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद, 1968
10. दवे कन्हैयालाल, भारतीय नृत्य परंपरा, यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद , 1992
11. गुजरात राज्य पुरातत्त्व विभाग, गुजरात के स्मारक और मूर्तियां, माहिती और संस्कृति विभाग, गुजरात सरकार, गांधीनगर, 2018